श्रीसीतापतये नमः

श्रीवाल्मीकिमहामुनिकृतशतकोटिरामचरितान्तर्गतं—

आनन्दरामायणम्

'ज्योत्स्ना'ऽभिधया भाषाटीकयाऽऽटीकितम्

राज्यकाण्डम् (पूर्वार्द्धम्)

प्रथमः सर्गः

(रामसहस्रनाम)

विष्णुदास उवाच

रामदास गुरो प्रोक्तं त्वया पूर्वं ममांतिके । विवाहकाण्डचरमसर्गेऽत्र पातकापहे ॥ १ ॥
रामनामसहस्रेण नारदेन महात्मना । सूतोक्तेन सभायां स रामचन्द्रः स्तुतस्त्विति ॥ २ ॥
तत्कीदृशं रामनामसहस्रं मां प्रकाशय । कथं सूतेन कथितं मुनीनामग्रतः पुरा ॥ ३ ॥

श्रीरामदास उवाच

सम्यक् पृष्टं त्वया शिष्य सावधानमनाः शृणु । रामनामसहस्रं च सूतोक्तं प्रवदामि ते ॥ ४ ॥
यथा त्वया कृतः प्रश्नः शौनकेन तथा कृतः । सूतः प्राह तदाकर्ण्य शौनकं नैमिषे वने ॥ ५ ॥

श्रीसूत उवाच

एकदा सुखमासीनौ पार्वतीपरमेश्वरौ । अन्योन्याश्लिष्टहृद्बाहू लोकरक्षणतत्परौ ॥ ६ ॥
इन्द्रादिलोकपालैश्च सेवितौ च परात्परौ । पार्वती परिपप्रच्छ तदा धर्माननुक्रमात् ॥ ७ ॥

पार्वत्युवाच

मन्नाथ जगतां नाथ सर्वज्ञ परमेश्वर । त्वत्प्रसादान्मया ज्ञातं धर्मशास्त्रमनुत्तमम् ॥ ८ ॥
प्रायश्चित्तं तु पापानां श्रुतं सर्वमशेषतः । ब्रह्महत्यादिपापानां निष्कृतिं वक्तुमर्हसि ॥ ९ ॥

विष्णुदासने कहा—हे गुरो रामदास ! अभी-अभी आप मुझसे कह चुके है कि पातकोंको नष्ट करनेवाले विवाहकांडमें नारदने सूतोक्त रामसहस्रनामसे सभामें रामचन्द्रजीको स्तुति की थी ॥ १ ॥ २ ॥ वह रामसहस्रनाम कैसा है और किस प्रकार श्रीसूतजीने मुनियोंके समक्ष उसे प्रकट किया था। सो आप मुझसे कहें ॥ ३ ॥ श्रीरामदासने कहा—हे शिष्य ! तुमने बहुत उत्तम प्रश्न किया है, सावधान चित्त होकर सुनो। मैं तुम्हें सूतका कहा हुआ रामसहस्रनाम सुनाता हूँ । आज जिस तरह तुम मुझसे पूछ रहे हो, उसी तरह शौनकने सूतजीसे पूछा था । उनका प्रश्न सुनकर नैमिपारण्यमें सूतजीने शौनकसे कहा—एक समय लोकरक्षामें तत्पर शिव और पार्वती गलबहियाँ डाले हुए आनन्दपूर्वक बैठे थे ॥ ४-६ ॥ सर्वश्रेष्ठ देवता शिव और पार्वतीकी सेवामें इन्द्रादि लोकपाल उपस्थित थे। उस समय शिव-पार्वतीमें कोई धार्मिक चर्चा चल रही थी। समय पाकर पार्वतीने शिवजीसे कहा-हे हमारे प्रभु जगत्के प्रभु, सर्वज्ञ एवं परमेश्वर ! आपकी कृपासे मैंने समस्त धर्मशास्त्र जान लिया। पापोंका प्रायश्चित्त किस तरह हो सकता है, सो भी सुन चुकी।

श्रीमहादेव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं महत् । सनत्कुमारविघ्नेशसंवादं पापनाशनम् ॥१०॥
उपविष्टं गणाध्यक्षमेकान्ते प्रणिपत्य च । सनत्कुमारः पप्रच्छ सर्वधर्मविदां वरम् ॥११॥

सनत्कुमार उवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वविघ्नविनाशन । द्विजहत्याहरं धर्मं वक्तुमर्हसि मे प्रभो ॥१२॥
विना भवन्तं धर्मस्य वक्ता नास्ति जगत्त्रये ।

श्रीगणेश उवाच

साधु पृष्टं त्वया ब्रह्मन्सर्वलोकोपकारकम् ॥१३॥
मया चिरं कृतं कर्म स्मारितं भवताऽनघ । पुराऽहं गजरूपेण जातः पर्वतसन्निभः ॥१४॥
ततो वृक्षान्समुत्पाट्य मुनिहिंसां समारभम् । तदा मया मुनिगणा निहता बहवो बलात् ॥१५॥
हाहाकारो महानासीद्‌ब्राह्मणानां समन्ततः । तदा हत्यासहस्रेण वेष्टितः पतितोऽस्म्यहम् ॥१६॥
निःसंज्ञं मृततुल्यं मां पतितं वीक्ष्य मे पिता । आराध्य जगतामीशं रामं सर्वहृदि स्थितम् ॥१७॥
प्रत्यक्षमकरोद्देव मद्धेतो रघुनन्दनम् । तदा प्रोवाच भगवान् श्रीरामः पितरं मम ॥१८॥

श्रीराम उवाच

प्रसन्नोऽस्मि महादेव किं मां प्रार्थयसे प्रभो । दास्यामि यदभीष्टं ते त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥१९॥

श्रीमहादेव उवाच

द्विजहत्यासमाविष्टं मम पुत्रमिमं प्रभो । निष्पापं गुरु देवेश यद्यस्ति मयि ते दया ॥२०॥

श्रीगणेश उवाच

तथेत्युक्त्वा तदा तेन कृपयाऽहं निरीक्षितः । तत्क्षणाल्लब्धचैतन्यो निर्मलज्ञानबृंहितः ॥२१॥
बहुभिर्गद्यपद्यैश्च स्तुत्वा त प्रणतोऽभवम् ।

अब आप मुझपर कृपा करके ब्रह्महत्यादि महापापोंकी निष्कृतिका कोई उपाय बतलाइए। श्रीशिवजी बोले—हे देवि! मैं तुम्हें अतिशय गूढ़ तथा पापनाशक सनत्कुमार और गणपतिका सम्वाद सुनाता हूँ ॥ ७-१० ॥ एक समय जब कि गणेशजी एकान्तमें बैठे हुए थे, तब सनत्कुमारने जाकर उन्हें प्रणाम किया और कहा—हे भगवन्! समस्त धर्मोंको जाननेवाले तथा विघ्नके विनाशक हे प्रभो! मुझे ब्रह्महत्याका विनाश करनेवाला कोई धर्म बतलाइये ॥ ११ ॥ १२ ॥ आपके सिवाय तीनों लोकमें कोई भी धर्मका वक्ता मुझे नहीं दीखता। गणपतिने कहा—हे ब्रह्मन्! तुमने मुझसे बहुत ठीक प्रश्न किया है। इससे सारे संसारका उपकार होगा ॥ १३ ॥ तुमने एक ही बातसे पूर्वमें किये हुए मेरे सब कर्मोंका स्मरण दिला दिया है। पूर्वकालमें मैं गजरूपसे संसारमें जन्मा था और पर्वतकी भाँति लम्बा-चौड़ा मेरा डील डौल था ॥ १४ ॥ उस समय मैंने पहले तो बहुतसे वृक्ष उखाड़े। फिर मुनियोंकी हिंसा आरम्भ कर दी। मैंने अपने अपरिमेय बलसे कितने ही मुनियोंका वध कर पापी बन बैठा ॥ १५ ॥ १६ ॥ मेरे होश-हवास ठिकाने न रहे तथा एक मृतककी नाईं मेरी आकृति हो गयी। मेरी दशा देखकर मेरे पिताने संसारके महाप्रभु रामकी आराधना की। इससे प्रसन्न होकर रामचन्द्रजी मेरे पिताके सम्मुख आये और कहने लगे। रामचन्द्रजी बोले—हे महादेव! मैं तुम्हारे ऊपर अति प्रसन्न हूँ। बतलाओ, तुम किसलिए इस प्रकार मेरी प्रार्थना कर रहे हो? तुम्हारी कामना यदि तीन लोकमें दुर्लभ होगी तो भी मैं उसे पूर्ण करूंगा ॥ १७-१९ ॥ श्रीशिवजीने कहा—हे प्रभो! मेरे पुत्र गणेशको ब्रह्महत्या लग गयी है। हे देवेश! यदि आपकी मुझपर दया हो तो उसे निष्पाप कर दीजिये ॥२०॥ श्रीगणेशजी सनत्कुमारसे कहने लगे—इस प्रकार मेरे पिताकी बातें सुनकर रामचन्द्रने अपनी कृपाभरी दृष्टिसे एक बार मेरी ओर देखा। उनके देखते ही मैं चैतन्य हो गया। मेरेमें एक निर्मल ज्ञानका तत्क्षण संचार हो गया ॥ २१ ॥ तब बहुतसे गद्य-पद्यों द्वारा मैंने भगवान्की

श्रीरामचन्द्र उवाच

द्विजहत्यासहस्रस्य प्रायश्चित्तं वदामि ते ॥ २२ ॥

जप नामसहस्रं मे हत्याकोटिविनाशकम् । इति गुह्यं ददौ रामस्तत्त्वं नामसहस्रकम् ॥२३॥

तस्य तद्ग्रहणादेव निष्पापोऽहं तदाऽभवम् । तदारभ्यास्मि देवानां पूज्योऽहं मुनिसत्तम ॥२४॥

त्वमप्येतदधीयानो राघवस्य महात्मना । नाम्नां सहस्रं लोकेषु प्रख्यापय महामते ॥२५॥

सनत्कुमार उवाच

धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि कृतार्थोऽस्मि गणाधिप । त्वत्प्रसादान्मयाऽधीतं रामनामसहस्रकम् ।.२६॥

श्रीमहादेव उवाच

इति विज्ञाप्य देवेशं परिक्रम्य प्रणम्य च । तदादि सततं जप्त्वा स्तोत्रमेतद्वरानने ॥२७॥

अवाप परमां सिद्धिं पुण्यपापविवर्जितः ।

श्रीपार्वत्युवाच

श्रोतुमिच्छामि देवेश तदहं सर्वकामदम् ॥ २८ ॥

नाम्नां सहस्रं मां ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया ।

श्रीमहादेव उवाच

अथ वक्ष्यामि भो देवि रामनामसहस्रकम् । शृणुष्वैकमनाः स्तोत्रं गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥२९॥

ऋषिर्विनायकश्चास्य ह्यनुष्टुप्छन्द उच्यते । परब्रह्मात्मको रामो देवता शुभदर्शने ॥३०॥

ॐअस्य श्रीरामसहस्रनाममालामंत्रस्य विनायक ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीरामो देवता महाविष्णुरिति बीजं गुणभृन्निर्गुणो महानिति शक्तिः सच्चिदानन्दविग्रह इति कीलकं श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

ॐश्रीरामचन्द्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः। सीतापतये तर्जनीभ्यां नमः। रघुनाथाय मध्यमाभ्यां नमः। भरताग्रजाय अनामिकाभ्यां नमः । दशरथात्मजाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । हनुमत्प्रभवे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। श्रीरामचन्द्राय हृदयाय नमः । सीतापतये शिरसे स्वाहा । रघुनाथाय शिखायै वषट् । भरताग्रजाय कवचाय हुम् । दशरथात्मजाय नेत्रत्रयाय वौषट् । हनुमत्प्रभवे अस्त्राय फट् ।

स्तुति की और उनके चरणोंमें लोट गया । फिर रामचन्द्रजी कहने लगे—हजारों द्विजहत्याके पापसे उद्धार पानेका उपाय मैं तुम्हें बतलाता हूँ ॥ २२ ॥ मेरे 'रामसहस्रनाम' का जप करोड़ ब्रह्महत्याओंका पाप भी नष्ट कर देता है। ऐसा कहकर रामचन्द्रजीने अपना गुप्त सहस्रनाम मुझे बताया और उसके ग्रहणमात्रसे मेरे पाप नष्ट हो गये । तभीसे हे मुनिसत्तम ! मैं देवताओंका भी पूज्य हो गया हूँ ॥ २३ ॥ २४ ॥ तुम भी इसी रामसहस्रनामका पाठ करते हुए संसारमें इसका प्रचार करो। सनत्कुमारने कहा–मैं धन्य हूँ। मुझपर आपकी बड़ी कृपा है। आपहीकी दयासे मैंने रामसहस्रनाम पा लिया। मैं कृतार्थ हो गया । श्रीशिवजीने कहा—इस तरह उस सहस्रनामको जानकर सनत्कुमारने गणेशजीकी परिक्रमा की, प्रणाम किया और तभीसे नित्य इसका जप करके पुण्य-पापसे विवर्जित होकर वे परम सिद्धिको प्राप्त हुए। पार्वतीजी बोलीं–हे देवेश ! सब कामनाओंको पूर्ण करनेवाले रामसहस्रनामको मैं भी जानना चाहती हूँ। यदि आपकी मुझपर दया रहती हो तो मुझे बताइए। शिवजी कहने लगे—हे देवि ! मैं तुम्हें वह पुनीत सहस्रनाम बतलाता हूँ। तुम भी सावधान मन होकर उस गूढ़ातिगूढ़ स्तोत्रको सुनो ॥ २५–२९ ॥ इस रामसहस्रनाम मंत्रमय स्तोत्रके ऋषि विनायक हैं और साक्षात् परब्रह्म राम इसके देवता हैं ॥ ३० ॥ 'ॐ अस्य श्रीराम' इस मंत्रसे विनियोग करके 'श्रीरामचन्द्राय' कहकर अंगुष्ठ, 'सीतापतये' कहकर तर्जनी, 'रघुनाथाय' कहकर मध्यकी अंगुली, 'भरताग्रजाय' कहकर अनामिका, 'दशरथात्मजाय' कहकर कनिष्ठिका, 'हनुमत्प्रभवे' कहकर दोनों करपृष्ठोंका न्यास करे। फिर 'रामचन्द्राय' कहकर हृदय, 'सीतापतये' कहकर सिर, 'रघुनाथाय' कहकर शिखा, 'भरताग्रजाय' से दोनों बाहुमूल, 'दशरथात्मजाय'

अथ ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलस्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम् ।
वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥३१॥
वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पमहासने मणिमये वीरासने संस्थितम् ।
अग्रे वाचयति प्रभंजनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजेच्छ्यामलम् ॥३२॥

सौवर्णमंडपे दिव्ये पुष्पके सुविराजिते । मूले कल्पतरोः स्वर्णपीठे सिंहाष्टसंयुते ॥३३॥
मृदुश्लक्ष्णांतरे तत्र जानक्या सह संस्थितम् । रामं नीलोत्पलश्यामं द्विभुजं पीतवाससम् ॥३४॥
स्मितवक्त्रं सुखासीनं पद्मपत्रनिभेक्षणम् । किरीटहारकेयूरकुण्डलैः कटकादिभिः ॥३५॥
भ्राजमानं ज्ञानमुद्राधरं वीरासनस्थितम् । स्पृशन्तं स्तनयोरग्रे जानक्याः सव्यपाणिना ॥३६॥
वसिष्ठवामदेवाद्यैः सेवितं लक्ष्मणादिभिः । अयोध्यानगरे रम्ये ह्यभिषिक्तं रघूद्वहम् ॥३७॥
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं रामनामसहस्रकम् । हत्याकोटियुतो वाऽपि मुच्यते नात्र संशयः ॥३८॥
ॐ रामः श्रीमान्महाविष्णुर्जिष्णुर्देवहितावहः । तत्त्वात्मा तारकं ब्रह्म शाश्वतः सर्वसिद्धिदः ॥३९॥
राजीवलोचनः श्रीमाँश्छ्रीरामो रघुपुंगवः । रामभद्रः सदाचारो राजेंद्रो जानकीपतिः ॥४०॥
अग्रगण्यो वरेण्यश्च वरदः परमेश्वरः । जनार्दनो जितामित्रः परार्थैकप्रयोजनः ॥४१॥

से दोनों नेत्र छुए तथा 'हनुमत्प्रभवे' कहकर चुटकी बजावे । अथ ध्यानम् । जिनका आजानु बाहु है, जो धनुष-बाण धारण किये हैं, पद्मासन मारकर बैठे हैं, पीले वस्त्र पहने हैं, नूतन कमलदलसे होड़ करनेवाली जिनकी दोनों आँखें हैं, जिनके वामांगमें सीताजी बैठी हैं, सीता तथा राम दोनों आपसमें एक दूसरेके मुखकी शोभा देखनेमें संलग्न हैं, नवीन मेघके सदृश जिनका मुख है, ऐसे विविध प्रकारके अलंकारोंसे अलंकृत तथा लम्बी-लम्बी जटा धारण करनेवाले रामचन्द्रका ध्यान करे ॥ ३१ ॥ कल्पवृक्षके नीचे सीताजीके साथ एक सुन्दर सुवर्णके मण्डपमें पुष्पनिर्मित महासन, जिसमें अनेक प्रकारकी मणियाँ जड़ी हैं, उसपर श्रीराम वीरासनसे बैठे हुए हैं। उनके सामने बैठे हनुमान्‌जी मुनियोंको परम तत्त्वकी व्याख्या सुना रहे हैं। भरतादि तीनों भ्राता जिनकी अगल-बगल खड़े हैं। ऐसे श्यामस्वरूप रामका भजन करे ॥ ३२ ॥ सुवर्णनिर्मित दिव्य पुष्पक विमान कल्पतरुके बीचे रक्खा है। जिसमें आठ सिंह लगे हैं। जो कोमल और चिकनी है, ऐसी गद्दीपर सीताके साथ बैठे हुए हैं, नीलकमल सरीखे जिनके नेत्र हैं, दो भुजाएँ हैं, पीत वस्त्र हैं, मुस्कुराता हुआ मुख है और वे आनन्दसे बैठे हैं। किरीट, हार, केयूर, कुण्डल और कटकादिसे वे सुशोभित हो रहे हैं। वे एक ओर ज्ञानमुद्रा धारण किये हैं। दूसरी तरफ दायें हाथसे सीताके स्तनोंको सहला रहे हैं ॥ ३३-३६ ॥ वसिष्ठ, वामदेव तथा लक्ष्मणादिक जिनकी सेवामें तत्पर हैं। अयोध्या नगरीमें जिनका राज्याभिषेक हो चुका है। ऐसे रघूद्वह रामचन्द्रजीका ध्यान करके सर्वदा इस रामसहस्रनामका पाठ करना चाहिए। ऐसा करनेसे यदि किसीको करोड़ों हत्यायें भी लगी हों तो दूर हो जाती हैं। इसमें किसी प्रकारका संशय नहीं करना चाहिए ॥३७॥३८॥ ॥ ३८ ॥ अब सहस्रनाम कहते हैं--राम, श्रीमान्, महाविष्णु, जिष्णु (सबको जीतनेवाले), देवहितावह (देवताओंका कल्याण करनेवाले), तत्त्वात्मस्वरूप, तारकब्रह्म, शाश्वत, सर्वसिद्धिद (सब प्रकारकी सिद्धियों-को देनेवाले) ॥ ३९ ॥ कमल सरीखे नेत्रवाले, श्रीराम, रघुवंशमें श्रेष्ठ, रामभद्र, सदाचार (पुनीत आचारवाले) राजेंद्र, जानकीके पति ॥ ४० ॥ सबके अग्रेसर, वरेण्य (सर्वश्रेष्ठ), वरद (वरदायक)

विश्वामित्रप्रियो दाता शत्रुजिच्छत्रुतापनः। सर्वज्ञः सर्ववेदादिः शरण्यो वालिमर्दनः ॥४२॥
ज्ञानभव्योऽपरिच्छेद्यो वाग्मी सत्यव्रतः शुचिः। ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञः खरध्वंसो प्रतापवान् ॥४३॥
द्युतिमानात्मवान् वीरो जितक्रोधोऽरिमर्दनः। विश्वरूपो विशालाक्षः प्रभुः परिवृढो दृढः ॥४४॥
ईशः खड्गधरः श्रीमान् कौसल्येयोऽनसूयकः। विपुलांसो महोरस्कः परमेष्ठी परायणः ॥४५॥
सत्यव्रतः सत्यसंधो गुरुः परमधार्मिकः। लोकेशो लोकवंद्यश्च लोकात्मा लोककृद्विभुः ॥४६॥
अनादिर्भगवान् सेव्यो जितमायो रघूद्वहः। रामो दयाकरो दक्षः सर्वज्ञः सर्वपावनः ॥४७॥
ब्रह्मण्यो नीतिमान् गोप्ता सर्वदेवमयो हरिः। सुन्दरः पीतवासाश्च सूत्रकारः पुरातनः ॥४८॥
सौम्यो महर्षिः कोदण्डः सर्वज्ञः सर्वकोविदः। कविः सुग्रीववरदः सर्वपुण्याधिकप्रदः ॥४९॥
भव्यो जितारिषड्वर्गो महोदारोऽघनाशनः। सुकीर्तिरादिपुरुषः कांतः पुण्यकृतागमः ॥५०॥
अकल्मषश्चतुर्बाहुः सर्वावासो दुरासदः १००। स्मितभाषी निवृत्तात्मा स्मृतिमान् वीर्यवान् प्रभुः ॥५१॥
धीरो दांतो घनश्यामः सर्वायुधविशारदः। अध्यात्मयोगनिलयः सुमना लक्ष्मणाग्रजः ॥५२॥
सर्वतीर्थमयः शूरः सर्वयज्ञफलप्रदः। यज्ञस्वरूपो यज्ञेशो जरामरणवर्जितः ॥५३॥

परमेश्वर, जनार्दन, जितामित्र (शत्रुओंको परास्त करनेवाले), परार्थैकप्रयोजन (परोपकार करना ही जिनका एकमात्र प्रयोजन है), विश्वामित्रके प्रिय, ज्ञाता, शत्रुओंको जीतनेवाले, शत्रुतापन (शत्रुको तपानेवाले), सर्वज्ञ, सर्ववेदादि (समस्त वेदोंके आदि कारण), शरण्य, वालिमर्दन (वालिको परास्त करनेवाले), ज्ञानभव्य, परिच्छेद्य, वाग्मी (कुशल वक्ता), सत्यव्रत, शुचि (पवित्र), ज्ञानगम्य (ज्ञानद्वारा जानने योग्य), दृढ़तम (स्थिर बुद्धिवाले), खरध्वंसी, प्रतापवान्, आत्मवान्, वीर, जितक्रोध (जिन्होंने क्रोधको जीत लिया है), अरिमर्दन (शत्रुको नीचा दिखानेवाले), विश्वस्वरूप (संसार ही जिनका स्वरूप है), विशालाक्ष (बड़ी-बड़ी आँखोंवाले), प्रभु (समस्त जगत्के ईश्वर) परिवृढ़ (सतर्क) ॥ ४१–४४ ॥ ईश (सब संसारके स्वामी), खड्गधर (तलवार धारण करनेवाले), श्रीमान्, कौसल्येय (कौसल्याके पुत्र), अनसूयक (किसीसे ईर्ष्या न करनेवाले), विपुलांस (जिनके खूब चौड़े कन्धे हैं), महोरस्क (जिनकी विशाल छाती है), परमेष्ठी (जो ब्रह्मास्वरूप हैं), सत्यव्रतपरायण (सत्यव्रती), सत्यसंध (सत्यप्रतिज्ञ), गुरु (सर्वश्रेष्ठ), परम धार्मिक, लोकज्ञ (सब लोकोंके ज्ञाता), लोकवंद्य (सब लोकोंसे वन्दनीय), लोकात्मा (सब लोकोंके आत्मा), लोककृत (लोकोंके रचयिता), विभु (सर्वव्यापी) ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ अनादि (जिनका आदि नहीं है), भगवान् (सर्वसम्पत्तिशाली), सेव्य (सेवा योग्य), जितमाय (मायाको जीतनेवाले), रघूद्वह (रघुवंशके उजागरकर्ता), राम, दयाकर (दयाके खानिस्वरूप), दक्ष (सब कार्योंमें निपुण), सर्वज्ञ, सर्वपावन (सबको पुनीत करनेवाले), ब्रह्मण्य (ब्राह्मणभक्त); नीतिमान्, गोप्ता (सर्वरक्षक), सर्वदेवमय, हरि, सुन्दर, पीतवासा (पीले वस्त्र धारण करनेवाले), पुरातन सूत्रकार (सर्वप्राचीन सूत्रकार अर्थात् सूत्ररूपमें ग्रंथोंके रचयिता), पुरातन (सबसे प्राचीन) ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ सौम्य (जिनका सरल स्वभाव है), महर्षि, कोदण्ड (धनुर्धर), सर्वज्ञ, सर्वकोविद (सब विषयोंके पूर्ण पण्डित), कवि, सुग्रीववरद (सुग्रीवको अभयवर देनेवाले), सर्वपुण्याधिकप्रद (सब पुण्योंसे भी अधिक फल देनेवाले) ॥ ४९ ॥ भव्य, जितारिषड्वर्ग (जिन्होंने अपने बलसे शत्रुके मंत्र-उत्साहादि छः वर्गोंको जीत लिया है), महोदार (जो सबसे उदार हैं), अघनाशन (पापका नाश करनेवाले, सुकीर्ति (जिनकी सुन्दर कीर्ति है), आदिपुरुष (जो सबके आदि पुरुष हैं), कान्त (सर्वप्रिय), पुण्यकृतागम (पवित्रविचारसम्पन्न), अकल्मष (पापरहित), चतुर्बाहु (चतुर्भुज), सर्वावास (सबके निवासस्थान), दुरासद (बड़ी कठिनाईसे प्राप्य १००) स्मितभाषी (मुस्कुराते हुए बातें करनेवाले), निवृत्तात्मा (जिनकी आत्मा स्वतन्त्र है), जो स्मृतिमान्, वीर्यवान् और सबके प्रभु हैं। धीर, दान्त (उदारप्रकृति), घनश्याम (मेघकी नाईं श्यामस्वरूप), सर्वायुधविशारद (सब शस्त्रास्त्रोंमें निपुण), अध्यात्मयोगनिलय (अध्यात्मयोगके निवास), सुमना (सुन्दर चित्तवाले), लक्ष्मणाग्रज (लक्ष्मणके बड़े भ्राता), ॥ ५०–५२ ॥ तीर्थमय, शूर (असाधारण योद्धा), सर्वयज्ञफलप्रद (सब यज्ञोंके फलदाता) यज्ञस्वरूप

वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजित्पुरुषोत्तमः । शिवलिंगप्रतिष्ठाता परमात्मा परात्परः ॥५४॥
प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः पूर्णः परपुरंजयः । अनन्तदृष्टिरानन्दो धनुर्वेदो धनुर्धरः ॥५५॥
गुणाकरो गुणश्रेष्ठः सच्चिदानन्दविग्रहः । अभिवाद्यो महाकायो विश्वकर्मा विशारदः ॥५६॥
विनीतात्मा वीतरागस्तपस्वीशो जनेश्वरः । कल्याणः प्रह्वतिः कल्पः सर्वेशः सर्वकामदः ॥५७॥
अक्षयः पुरुषः साक्षी केशवः पुरुषोत्तमः । लोकाध्यक्षो महाकार्यो विभीषणवरप्रदः ॥५८॥
आनन्दविग्रहो ज्योतिर्हनुमत्प्रभुरव्ययः । भ्राजिष्णुः सहनो भोक्ता सत्यवादी बहुश्रुतः ॥५९॥
सुखदः कारणं कर्ता भवबन्धविमोचनः । देवचूडामणिर्नेता ब्रह्मण्यो ब्रह्मवर्धनः ॥६०॥
संसारतारको रामः सर्वदुःखविमोक्षकृत् । विद्वत्तमो विश्वकर्ता विश्वकृद्विश्वकर्म च ॥६१॥
नित्यो नियतकल्याणः सीताशोकविनाशकृत् । काकुत्स्थः पुण्डरीकाक्षो विश्वामित्रभयापहः ॥६२॥
मारीचमथनो रामो विराधवधपण्डितः । दुःस्वप्ननाशनो रम्यः किरीटी त्रिदशाधिपः ॥६३॥
महाधनुर्महाकायो भीमो भीमपराक्रमः । तत्त्वस्वरूपस्तत्त्वज्ञस्तत्त्ववादी सुविक्रमः ॥६४॥
भूतात्मा भूतकृत्स्वामी कालज्ञानी महावपुः । अनिर्विण्णो गुणग्रामो निष्कलंकः कलंकहा ॥६५॥
स्वभावभद्रः शत्रुघ्नः केशवः स्थाणुरीश्वरः । भूतादिः शंभुरादित्यः स्थविष्ठः शाश्वतो ध्रुवः ॥६६॥
कवची कुण्डली चक्री खड्गी भक्तजनप्रियः । अमृत्युर्जन्मरहितः सर्वजित्सर्वगोचरः ॥६७॥
अनुत्तमोऽप्रमेयात्मा सर्वात्मा गुणसागरः२०० । समः समात्मा समगो जटामुकुटमण्डितः ॥६८॥
अजेयः सर्वभूतात्मा विष्वक्सेनो महातपाः । लोकाध्यक्षो महाबाहुरमृतो वेदवित्तमः ॥६९॥

(यज्ञके मूर्त रूप), यज्ञेश (यज्ञोंके स्वामी), जरामरणवर्जित (बुढ़ापा और मृत्यु दोनोंसे रहित), वर्णाश्रमगुरु (वर्ण और आश्रमके गुरु), शत्रुजित् (शत्रुओंको जीतनेवाले) पुरुषोत्तम (सब पुरुषोमें श्रेष्ठ), शिवलिंगप्रतिष्ठाता (विविध शिवलिंगोंके संस्थापक), परमात्मा, परात्पर, प्रमाणभूत (विश्वके प्रमाणस्वरूप), दुर्ज्ञेय (बड़ी कठिनाईसे जानने योग्य), पूर्ण, परपुरञ्जय (शत्रुनगरोंके विजेता), अनन्तदृष्टि (अपारदृष्टि), आनन्द, धनुर्वेदके ज्ञाता, धनुर्धारी, गुणाकर (गुणोंके भण्डार), गुणश्रेष्ठ (सब गुणोंमें श्रेष्ठ), सच्चिदानन्दविग्रह (सत् चित् आनन्द इन तीनोंसे जिनका शरीर बना है), अभिवाद्य (सबके वन्दनीय), महाकाय, विश्वकर्मा, विशारद ॥ ५३–५६ ॥ विनीत आत्मावाले, वीतराग (रागद्वेषशून्य), तपस्वीश (तपस्वियोंके स्वामी), जनेश्वर, कल्याण (कल्याणस्वरूप), प्रह्वत्ति (सदा प्रसन्न), कल्प (स्थिति तथा प्रलयकालके अधिपति), सर्वेश, सर्वकामद, अक्षय, पुरुष, साक्षी, केशव, पुरुषोत्तम, लोकाध्यक्ष, महाकार्य, विभीषणवरप्रद ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ आनन्दविग्रह (आनन्दके मूर्त रूप), ज्योतिस्वरूप, हनुमान्के स्वामी, अविनाशी, भ्राजिष्णु (दीप्तिसम्पन्न), सहनशील, भोक्ता, सत्यवादी बहुश्रुत ॥ ५९ ॥ सुखदायी, कारणस्वरूप, कर्त्ता, भवबन्धनसे छुड़ानेवाले, देवताओंके मूर्धन्य, ब्राह्मणभक्त, ब्राह्मणोंके उन्नायक ॥ ६० ॥ संसारसागरसे तारनेवाले, सब दुःखोंसे छुड़ानेवाले, अतिशय विद्वान्, विश्वरचयिता, विश्वकर्त्ता, विश्वके कर्तव्य कर्मस्वरूप ॥ ६१ ॥ नित्य, कल्याणतत्पर, सीताशोकनाशक, काकुत्स्थ, कमलनयन, विश्वामित्रभयहारी ॥ ६२ ॥ मारीचघाती, राम, विराधवधमें निपुण, दुःखस्वप्ननिवारक, रमणीक, किरीटधारी, देवाधिपति ॥ ६३ ॥ विशाल धनुष धारण करनेवाले, विशालकाय, भयानक, भयानक पराक्रम-सम्पन्न, तत्त्वोंके मूर्तरूप, तत्त्वोंके ज्ञाता, तत्त्वविषयके वक्ता, असाधारण पराक्रमी ॥ ६४ ॥ प्राणिमात्रके स्रष्टा, सबके स्वामी, समयके पारखी, विशालशरीरधारी, सदा प्रसन्न, गुणधाम, निष्कलंक, कलंकनाशक ॥ ६५ ॥ स्वभावतः कल्याणकारी, शत्रुनाशक, केशव, चिरस्थायी, ईश्वर, प्राणियोंके आदि, शम्भु, अदिति-तनय, स्थायी, नित्य, अटल ॥ ६६ ॥ कवचधारी, कुण्डलधारी, चक्रधारी, खड्गधारी, भक्तजनोंके प्रिय, अमर, अजन्मा, सबके विजेता, सर्वदर्शी ॥ ६७ ॥ सर्वोत्तम, अप्रमेयात्मा, सर्वात्मा, गुणसागर २०० । सदा सम, प्रकृति, समात्मा, समगामी, जटामुकुटविमण्डित ॥ ६८ ॥ अजेय, सर्वभूतात्मा, विष्वक्सेन, महातपा,

सहिष्णुः सद्गतिः शास्ता विश्वयोनिर्महाद्युतिः । अतींद्र ऊर्जितः प्रांशुरुपेंद्रो वामनो बलिः ॥७०॥
धनुर्वेदो विधाता च ब्रह्मा विष्णुश्च शंकरः । हंसो मरीचिर्गोविंदो रत्नगर्भो महद्द्युतिः ॥७१॥
व्यासो वाचस्पतिः सर्वदर्पितासुरमर्दनः । जानकीवल्लभः श्रीमान् प्रकटः प्रीतिवर्द्धनः ॥७२॥
सम्भवोऽतींद्रियो वेद्यो निर्देशो जाम्बवत्प्रभुः । मदनो मन्मथो व्यापी विश्वरूपो निरंजनः ॥७३॥
नारायणोऽग्रणी साधुर्जटायुप्रीतिवर्द्धनः । नैकरूपो जगन्नाथः सुरकार्यहितः प्रभुः ॥७४॥
जितक्रोधो जितारातिः प्लवगाधिपराज्यदः । वसुदः सुभुजो नैकमायो भव्यः प्रमोदनः ॥७५॥
चण्डांशुः सिद्धिदः कल्पः शरणागतवत्सलः । अगदो रोगहर्ता च मन्त्रज्ञो मन्त्रभावनः ॥७६॥
सौमित्रिवत्सलो धुर्यो व्यक्ताव्यक्तस्वरूपधृक् । वसिष्ठो ग्रामणीः श्रीमाननुकूलः प्रियंवदः ॥७७॥
अतुलः सात्त्विको धीरः शरासनविशारदः । ज्येष्ठः सर्वगुणोपेतः शक्तिमांस्ताटकांतकः ॥७८॥
वैकुण्ठः प्राणिनां प्राणः कमलः कमलाधिपः । गोवर्धनधरो मत्स्यरूपः कारुण्यसागरः ॥७९॥
कुम्भकर्णप्रभेत्ता च गोपिगोपालसंवृतः ३०० । मायावी व्यापको व्यापी रेणुकेयबलापहः ॥८०॥
पिनाकमथनो वंद्यः समर्थो गरुडध्वजः । लोकत्रयाश्रयो लोकभरितो भरताग्रजः ॥८१॥
श्रीधरः संगतिर्लोकसाक्षी नारायणो विभुः । मनोरूपी मनोवेगी पूर्णः पुरुषपुंगवः ॥८२॥
यदुश्रेष्ठो यदुपतिर्भूतावासः सुविक्रमः । तेजोधरो धराधरश्चतुर्मूर्तिर्महानिधिः ॥८३॥
चाणूरमथनो वंद्यः शांतो भरतवंदितः । शब्दातिगो गभीरात्मा कोमलांगः प्रजागरः ॥८४॥
लोकोर्ध्वगः शेषशायी क्षीराब्धिनिलयोऽमलः । आत्मज्योतिरदीनात्मा सहस्रार्चिः सहस्रपात् ॥८५॥
अमृतांशुर्महीगर्तो निवृत्तविषयस्पृहः । त्रिकालज्ञो मुनिः साक्षी विहायसगतिः कृती ॥८६॥
पर्जन्यः कुमुदो भूतावासः कमललोचनः । श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासो वीरहा लक्ष्मणाग्रजः ॥८७॥
लोकाभिरामो लोकारिमर्दनः सेवकप्रियः । सनातनतमो मेघश्यामलो राक्षसांतकः ॥८८॥

लोकोंके स्वामी, महाबाहु, अमृत, वेदज्ञोंमें श्रेष्ठ ॥ ६९ ॥ सहिष्णु, सद्गति, शासक, विश्वयोनि, परमकान्ति-सम्पन्न, अतीन्द्र (इन्द्रसे श्रेष्ठ), तेजःसम्पन्न, सर्वोच्च, उपेन्द्र, वामन, बलि, ॥ ७० ॥ धनुर्वेदविधाता, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, हंस, मरीचि, गोविन्द, रत्नगर्भ, महातेजस्वी ॥ ७१ ॥ व्यास, बृहस्पति, सभी अभिमानी असुरोंके घातक, जानकीवल्लभ, श्रीमान्, प्रकट, प्रीतिवर्धन ॥ ७२ ॥ संभव, अतीन्द्रिय, वेद्य, निर्देश, जाम्बवान्‌के स्वामी, मदन, मन्मथ, सर्वव्यापी, विश्वरूप, निरञ्जन ॥ ७३ ॥ नारायण, अग्रणी, साधु, जटायुके प्रीतिवर्धक, अनेकरूप, जगन्नाथ, देवकार्यसाधक, प्रभु ॥ ७४ ॥ जितक्रोध, शत्रुविजेता, सुग्रीवराज्यदायक, वसुदाता, वृहुभुज, विविधमायाधारी, भव्य, प्रमोदन ॥ ७५ ॥ चण्डांशु, सिद्धिदायक, कल्प, शरणागत-वत्सल, अगद, रोगहर्ता, मन्त्रज्ञ, मंत्रभावन ॥ ७६ ॥ लक्ष्मणप्रिय, धुर्य, व्यक्त-अव्यक्तरूपधारी, वसिष्ठ, ग्रामीण, श्रीमान्, अनुकुल, प्रियवादी ॥ ७७ ॥ अतुलनीय, सात्त्विक, धीर, धनुर्विद्यामें निपुण, श्रेष्ठ, सर्वगुणसम्पन्न, शक्तिमान्, ताड़काके घातक ॥ ७८ ॥ वैकुण्ठ, प्राणियोंके प्राण, कर्मठ, कमलापति, गोवर्धनधारी, मत्स्य-रूपधारी, करुणासागर ॥ ७९ ॥ कुम्भकर्णके नाशक, गोपीगोपालसंवृत ३००, मायावी, व्यापक, व्यापी, रेणुकेय (परशुरामके बलनाशक) ॥ ८० ॥ धनुषभंजक, वंद्य, समर्थ, गरुडध्वज, तीनों लोकोंके आश्रय, लोकभरित, भरतके बड़े भ्राता ॥ ८१ ॥ श्रीधर, सङ्गति, लोकसाक्षी, नारायण, विभु, मनोरूपी, मनो-वेगी, पूर्ण, पुरुष-पुंगव ॥ ८२ ॥ यदुश्रेष्ठ, यदुपति, भूतावास, सुविक्रम, तेजोधर, धराधर, चतुर्मूर्ति, महानिधि ॥ ८३ ॥ चाणूरमथन, वंद्य, शान्त, भरतवन्दित, शब्दलिंग, गभीरात्मा, कोमलांग, प्रजागर ॥ ८४ ॥ लोकोर्ध्वगामी, शेषशायी, क्षीराब्धिनिलय, अमल, आत्मज्योति, अदीनात्मा, सहस्रार्चि, सहस्रचरण ॥ ८५ ॥ अमृतांशु, महीगर्त, विषयकी स्पृहासे रहित, त्रिलोकज्ञ, मुनि, साक्षी, विहायसगति, कृती ॥ ८६ ॥ पर्जन्य, कुमुद, भूतावास, कमललोचन, श्रीवत्सवक्षा, श्रीवास, वीरहा, लक्ष्मणाग्रज ॥ ८७ ॥ लोकाभिराम, लोका-

दिव्यायुधधरः श्रीमानप्रमेयो जितेंद्रियः । भूदेववंद्यो जनकप्रियकृत्प्रपितामहः ॥८९॥
उत्तमः सात्त्विकः सत्यः सत्यसन्धस्त्रिविक्रमः । सुवृत्तः सुगमः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ॥९०॥
दामोदरोऽच्युतः शार्ङ्गी वामनो मथुराधिपः । देवकीनन्दनः शौरि शूरः कैटभमर्दनः ॥९१॥
सप्ततालप्रभेत्ता च मित्रवंशप्रवर्धनः । कालस्वरूपी कालात्मा कालः कल्याणदः ४०० कलिः ॥९२॥
संवत्सरो ऋतुः पक्षो ह्ययनं दिवसो युगः । स्तव्यो विविक्तो निर्लेपः सर्वव्यापी निराकुलः ॥९३॥
अनादिनिधनः सर्वलोकपूज्यो निरामयः । रसो रसज्ञः सारज्ञो लोकसारो रसात्मकः ॥९४॥
सर्वदुःखातिगो विद्याराशिः परमगोचरः । शेषो विशेषो विगतकल्मषो रघुपुङ्गवः ॥९५॥
वर्णश्रेष्ठो वर्णभाव्यो वर्णो वर्णगुणोज्ज्वलः । कर्मसाक्षी गुणश्रेष्ठो देवः सुरवरप्रदः ॥९६॥
देवाधिदेवो देवर्षिर्देवासुरनमस्कृतः । सर्वदेवमयश्चक्री शार्ङ्गपाणी रघूत्तमः ॥९७॥
मनोबुद्धिरहंकारः प्रकृतिः पुरुषोऽव्ययः । न्यायो न्यायी नयी श्रीमान् नयो नगधरो ध्रुवः ॥९८॥
लक्ष्मीविश्वम्भरो भर्ता देवेंद्रो बलिमर्दनः । बाणारिमर्दनो यज्वानुत्तमो मुनिसेवितः ॥९९॥
देवाग्रणीः शिवध्यानतत्परः परमः परः । सामगेयः प्रियः शूरः पूर्णकीर्तिः सुलोचनः ॥१००॥
अव्यक्तलक्षणो व्यक्तो दशास्यद्विपकेसरी । कलानिधिः कलानाथः कमलानन्दवर्द्धनः ॥१०१॥
पुण्यः पुण्याधिकः पूर्णः पूर्वः पूरयिता रविः । जटिलः कल्मषध्वांतप्रभञ्जनविभावसुः ॥१०२॥
जयी जितारिः सर्वादिः शमनो भवभंजनः । अलङ्करिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोत्तमः ॥१०३॥
आशुः शब्दपतिः शब्दागोचरो रंजनो लघुः । निःशब्दपुरुषो मायी स्थूलः सूक्ष्मो ५०० विलक्षणः ॥
आत्मयोनिरयोनिश्च सप्तजिह्वः सहस्रपात् । सनातनतमः स्रग्वी पेशलो विजितांबरः ॥१०५॥
शक्तिमान् शंखभृन्नाथो गदाधररथांगभृत् । निरीहो निर्विकल्पश्च चिद्रूपो वीतसाध्वसः ॥१०६॥
सनातनः सहस्राक्षः शतमूर्तिर्घनप्रभः । हृत्पुंडरीकशयनः कठिनो द्रव एव च ॥१०७॥
सूर्यो ग्रहपतिः श्रीमान् समर्थोऽनर्थनाशनः । अधर्मशत्रु रक्षोघ्नः पुरुहूतः पुरस्तुतः ॥१०८॥

रिमर्दन, सेवकप्रिय, सनातनतम, मेघश्यामल, राक्षसान्तक ॥ ८८ ॥ दिव्यायुधधर, श्रीमान्, अप्रमेय, जितेन्द्रिय, विप्रवंद्य, पिताके प्रियकर्ता, प्रपितामह ॥ ८९ ॥ उत्तम, सात्त्विक, सत्य, सत्यसन्ध, त्रिविक्रम, सुवृत्त, सुगम, सूक्ष्म, सुघोष, सुखद, सुहृत् ॥ ९० ॥ दामोदर, अच्युत, शार्ङ्गी, वामन, मथुराधिपति, देवकीनन्दन, वासुदेव, शूर, कैटभमर्दन ॥ ९१ ॥ सप्ततालप्रभेत्ता, मित्रवंशवर्धन, कालस्वरूपी, कालात्मा, काल, कल्याणद ४०० कलि, ॥ ९२ ॥ संवत्सर, ऋतु, पक्ष, अयन, युग, स्तव्य, विविक्त, निर्लेप, सर्वव्यापी, निराकुल ॥ ९३ ॥ अनादिनिधन, सर्वलोकपूज्य, निरामय, रस, रसज्ञ, सारज्ञ, लोकसार, रसात्मक ॥ ९४ ॥ सर्वदुःखातिग, विद्याराशि, परमगोचर, शेष, विशेष, विगतकलमष, रघुपुङ्गव, ॥ ९५ ॥ वर्णश्रेष्ठ, वर्णभाव्य, वर्ण, वर्णगुणोज्ज्वल, कर्मसाक्षी, गुणश्रेष्ठ, देव, सुखप्रद ॥ ९६ ॥ देवाधिदेव, देवर्षि, देवासुरनमस्कृत, सर्वदेवमय, चक्री, शार्ङ्गपाणि, रघूत्तम, ॥ ९७ ॥ मन-बुद्धि-अहंकार, प्रकृति, पुरुष, अव्यय, न्याय, न्यायी, नयी, श्रीमान्, नय, नगधर, ध्रुव, ॥ ९८ ॥ लक्ष्मी-विश्वम्भर, भर्ता, देवेन्द्र, बलिमर्दन, बाणारिमर्दन, यज्वा, उत्तम, मुनिसेवित ॥ ९९ ॥ देवाग्रणी, शिवध्यानतत्पर, परम, पर, सामगेय, प्रिय, शूर, पूर्णकीर्ति, सुलोचन ॥ १०० ॥ अव्यक्तलक्षण, व्यक्त, दशास्यद्विपकेसरी, कलानिधि, कलानाथ, कमलानन्दवर्धन ॥ १०१ ॥ पुण्याधिक, पूर्ण, पूरयिता, रवि, जटिल, कल्मषोंको ध्वस्त करनेवाले, अग्नि ॥ १०२ ॥ जयी, जितारि, सर्वादि, शमन, भवभञ्जन, अलंकरिष्णु, अचल, रोचिष्ण, विक्रमोत्तम ॥ १०३ ॥ आशु, शब्दपति, शब्दागोचर, रंजन, लघु, निःशब्द, पुरुष, मायी, स्थूल, सूक्ष्म ५००, विलक्षण ॥१०४॥ आत्मयोनि, अयोनि, सप्तजिह्व, सहस्रपात्, सनातनतम, स्रग्वी, पेशल, विजिताम्बर ॥ १०५ ॥ शक्तिमान्, शंखभृत्, नाथ, गदाधर, रथांगभृत्, निरीह, निर्विकल्प, चिद्रूप, वीतसाध्वस ॥ १०६ ॥ सनातन,

ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः । हिरण्यगर्भो ज्योतिष्मान् सुललाटः सुविक्रमः॥१०९॥
शिवपूजारतः श्रीमान् भवानीप्रियकृद्वशी । नरो नारायाणः श्यामः कपर्दी नीललोहितः ॥११०॥
रुद्रः पशुपतिः स्थाणुर्विश्वामित्रो द्विजेश्वरः । मातामहो मातरिश्वा विरिंचिर्विष्टरश्रवाः ॥१११॥
अक्षोभ्यः सर्वभूतानां चण्डः सत्यपराक्रमः । बालखिल्यो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ॥११२॥
निदाघस्तपनो मेघः शुक्रः परबलापहृत् । वसुश्रवाः कव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ॥११३॥
रामो नीलोत्पलश्यामो ज्ञानस्कंदो महाद्युतिः । कबन्धमथनो दिव्यः कम्बुग्रीवः शिवप्रियः । ११४॥
सुखी नीलः सुनिष्पन्नः सुलभः शिशिरात्मकः । असंसृष्टोऽतिथिः शूरः प्रमाथी पापनाशकृत् ॥११५॥
पवित्रपादः पापारिर्मणिपूरो नभोगतिः । उत्तारणो दुष्कृतिहा दुर्धर्षो दुःसहो बलः६००॥११६।
अमृतेशोऽमृतवपुर्धर्मी धर्मः कृपाकरः । भगो विवस्वानादित्यो योगाचार्यो दिवस्पतिः॥११७।
उदारकीर्तिरुद्योगी वाङ्मयः सदसन्मयः । नक्षत्रमानी नाकेशः स्वाधिष्ठानः षडाश्रयः ॥११८॥
चतुर्वर्गफलं वर्णशक्तित्रयफलं निधिः । निधानगर्भो निर्व्याजो निरीशो व्यालमर्दनः ॥११९॥
श्रीवल्लभः शिवारम्भः शांतो भद्रः समंजसः । भूशायी भूतकृद्भूतिर्भूषणो भूतवाहनः ॥१२०।
अकायो भक्तकायस्थः कालज्ञानी महापटुः । परार्धवृत्तिरचलो विविक्तः श्रुतिसागरः ॥१२१॥
स्वभावभद्रो मध्यस्थः ससारभयनाशनः । वेद्यो वैद्यो वियद्गोप्ता सर्वामरमुनीश्वरः ॥१२२॥
सुरेन्द्रः कारणं कर्मकरः कर्मी ह्यधोक्षजः । धैर्योऽग्रधुर्यो धात्रीशः संकल्पः शर्वरीपतिः ॥१२३॥
परमार्थगुरुर्दृष्टिः सुचिराश्रितवत्सलः । विष्णुर्जिष्णुर्विभुर्यज्ञो यज्ञेशो यज्ञपालकः ॥१२४॥
प्रभुर्विष्णुर्ग्रसिष्णुश्च लोकात्मा लोकपालकः । केशवः केशिहा काव्यः कविः कारणकारणम् ।१२५॥
कालकर्ता कालशेषो वासुदेवः पुरुष्टुतः । आदिकर्ता वराहश्च वामनो मधुसूदनः ॥१२६॥
नारायणो नरो हंसो विष्वक्सेनो जनार्दनः । विश्वकर्ता महायज्ञो ज्योतिष्मान्पुरुषोत्तमः७००।१२७

सहस्राक्ष, शतमूर्ति, घनप्रद, हृत्पुण्डरीकशयन, कठिन, द्रव ॥ १०७ ॥ सूर्य, ग्रहपति, श्रीमान्, समर्थ, अनर्थ-
नाशन, अधर्मशत्रु, रक्षोघ्न, पुरुहूत, पुरुष्टुत, ॥ १०८ ॥ ब्रह्मगर्भ, बृहद्गर्भ, धर्मधेनु, घनागम, हिरण्यगर्भ,
ज्योतिष्मान्, सुललाट, सुविक्रम ॥ १०९ ॥ शिवपूजारत, श्रीमान्, भवानीप्रियकृत्, वशी, नर, नारायण, श्याम,
कपर्दी, नीललोहित, ॥ ११० ॥ रुद्र, पशुपति, स्थाणु, विश्वामित्र, द्विजेश्वर, मातामह, मातरिश्वा, विरिञ्च,
विष्टरश्रवा ॥ १११ ॥ अक्षोभ्य, चण्ड, सत्यपराक्रम, बालखिल्य, महाकल्प, कल्पवृक्ष, कलाधर ॥ ११२ ॥
निदाघ, तपन, मेघ, शुक्र, परबलापहारी, वसुश्रवा, हव्यवाह, प्रतप्त, विश्वभोजन ॥ ११३ ॥ राम, नीलो-
त्पलश्याम, ज्ञानस्कन्द, महाद्युति, कबन्धमथन, दिव्य, कम्बुग्रीव, शिवप्रिय, ॥ ११४ ॥ सुखी, नील, सुनिष्पन्न,
सुलभ, शिशिरात्मक, असंसृष्ट, अतिथि, शूर, प्रमाणी, पापनाशकारी ॥ ११५ ॥ पवित्रपाद, पापारि, मणि-
पूर, नभोगति, उत्तारण, दुर्धर्ष, दुःसह, बल ६०० ॥ ११६ ॥ अमृतेश, अमृतवपु, धर्मी, कृपाकर, भग,
विवस्वान्, आदित्य, योगाचार्य, दिवस्पति ॥ ११७ ॥ उदारकीर्ति, उद्योगी, वाङ्मय, सदसन्मय, नक्षत्र-
मानी, नाकेश, स्वाधिष्ठान, षडाश्रय ॥ ११८ ॥ चतुर्वर्गफल, वर्णशक्तित्रयफल, निधि, निधानगर्भ, निर्व्याज,
निरीश, व्यालमर्दन ॥ ११९ ॥ श्रीवल्लभ, शिवारम्भ, शान्त, भद्र, समंजस, भूशायी, भूति, भूतवाहन ॥ १२० ॥
अव्यय, भक्तकायस्थ, कालज्ञानी, महापटु, परार्धवृत्ति, अचल, विविक्त, श्रुतिसागर ॥ १२१ ॥ स्वभावभद्र,
मध्यस्थ, संसारभयनाशन, वेद्य, वैद्य, वियद्गोप्ता, सर्वामरमुनीश्वर ॥ १२२ ॥ सुरेन्द्र, कारण, कर्मकर,
कर्मी, अधोक्षज, धैर्य, उग्रधुर्य, धात्रीश, संकल्प, शर्वरीपति ॥ १२३ ॥ परमार्थगुरु, दृष्टि, सुचिराश्रितवत्सल,
विष्णु, जिष्णु, विभु, यज्ञ, यज्ञेश, यज्ञपालक ॥ १२४ ॥ प्रभु, विष्णु, ग्रसिष्णु, लोकात्मा, लोकपालक, केशव,
केशिहा, काव्य, कवि, कारणकारण ॥ १२५ ॥ कालकर्ता, कालशेष, वासुदेव, पुरुष्टुत, आदिकर्ता, वराह,
वामन, मधुसूदन ॥ १२६ ॥ नारायण, नर, हंस, विष्वक्सेन, जनार्दन, विश्वकर्ता, महायज्ञ, ज्योतिष्मान्,

वैकुण्ठः पुण्डरीकाक्षः कृष्णः सूर्यः सुरार्चितः । नारसिंहो महाभीमो वज्रदंष्ट्रो नखायुधः ॥१२८॥
आदिदेवो जगत्कर्ता योगीशो गरुडध्वजः । गोविन्दो गोपतिर्गोप्ता भूपतिर्भुवनेश्वरः ॥१२९॥
पद्मनाभो हृषीकेशो धाता दामोदरः प्रभुः । त्रिविक्रमस्त्रिलोकेशो ब्रह्मेशः प्रीतिवर्धनः ॥१३०॥
संन्यासी शास्त्रतत्त्वज्ञो मन्दिरो गिरिशो नतः । वामनो दुष्टदमनो गोविन्दो गोपवल्लभः ॥१३१॥
भक्तप्रियोऽच्युतः सत्यः सत्यकीर्तिर्धृतिः स्मृतिः । कारुण्यः करुणो व्यासः पापहा शांतिवर्द्धनः १३२॥
बदरीनिलयः शान्तस्तपस्वी वैद्युतः प्रभुः । भूतावासो महावासा श्रीनिवासः श्रियः पतिः॥१३३॥
तपोवासो मुदावासः सत्यवासः सनातनः । पुरुषः पुष्करः पुण्यः पुष्कराक्षो महेश्वरः ॥१३४॥
पूर्णमूर्तिः पुराणज्ञः पुण्यदः प्रीतिवर्धनः । पूर्णरूपः कालचक्रप्रवर्तनसमाहितः ॥१३५॥
नारायणः परं ज्योतिः परमात्मा सदाशिवः । शंखी चक्री गदी शार्ङ्गी लांगूली मुसली हली ॥१३६॥
किरीटी कुंडली हारी मेखली कवची ध्वजी । योधा जेता महावीर्यः शत्रुघ्नः शत्रुतापनः ॥१३७॥
शास्ता शास्त्रकरः शास्त्रं शंकरः शंकरस्तुतः । सारथी सात्त्विकः स्वामी सामवेदप्रियः समः ८००॥
पवनः संहितः शक्तिः सम्पूर्णाङ्गः समृद्धिमान् । स्वर्गदः कामदः श्रीदः कीर्तिदः कीर्तिदायकः ॥१३९॥
मोक्षदः पुण्डरीकाक्षः क्षीराब्धिकृतकेतनः । सर्वात्मा सर्वलोकेशः प्रेरकः पापनाशनः ॥१४०॥
वैकुंठः पुण्डरीकाक्षः सर्वदेवनमस्कृतः । सर्वव्यापी जगन्नाथः सर्वलोकमहेश्वरः ॥१४१॥
सर्गस्थित्यन्तकृद्देवः सर्वलोकसुखावहः । अक्षयः शाश्वतोऽनन्तः क्षयवृद्धिविवर्जितः ॥१४२॥
निर्लेपो निर्गुणः सूक्ष्मो निर्विकारो निरंजनः । सर्वोपाधिविनिर्मुक्तः सत्तामात्रव्यवस्थितः ॥१४३॥
अधिकारी विभुर्नित्यः परमात्मा सनातनः । अचलो निश्चलो व्यापी नित्यतृप्तो निराश्रयः॥१४४॥
श्यामी युवा लोहिताक्षो दीप्त्या शोभितभाषणः । आजानुबाहुः सुमुखः सिंहस्कन्धो महाभुजः ॥१४५॥
सत्त्ववान् गुणसंपन्नो दीप्यमानः स्वतेजसा । कालात्मा भगवान् कालः कालचक्रप्रवर्तकः ॥१४६॥

पुरुषोत्तम ७०० ॥ १२७ ॥ वैकुण्ठ, पुण्डरीकाक्ष, कृष्ण, सूर्य, सुरार्चित, नारसिंह, महाभीम, वज्रदंष्ट्र, नखायुध ॥ १२८ ॥ आदिदेव, जगत्कर्ता, योगीश, गरुडध्वज, गोविन्द, गोपति, गोप्ता, भूपति, भुवनेश्वर ॥ १२९ ॥ पद्मनाभ, हृषीकेश, धाता, दामोदर, प्रभु, त्रिविक्रम, त्रिलोकेश, ब्रह्मेश, प्रीतिवर्धन ॥ १३० ॥ संन्यासी, शास्त्रतत्त्वज्ञ, मन्दर, गिरीश, नत, वामन, दुष्टदमन, गोविन्द, गोपवल्लभ, ॥ १३१॥ भक्तिप्रिय, अच्युत, सत्य, सत्यकीर्ति, धृति, स्मृति, कारुण्य, करुण, व्यास, पापहा, शान्तिवर्द्धन ॥ १३२ ॥ बदरीनिलय, शान्ति, तपस्वी, वैद्युत, प्रभु, भूतावास, महावास, श्रीनिवास, श्रीपति ॥ १३३ ॥ तपोवास, मुदावास, सत्यवास, सनातन, पुष्कर, पुण्य, पुष्कराक्ष, महेश्वर ॥ १३४ ॥ पूर्णमूर्ति, पुराणज्ञ, पुण्यज्ञ, प्रीतिवर्द्धन, पूर्णरूप, कालचक्रप्रवर्तन, समाहित ॥ १३५ ॥ नारायण, परंज्योति, परमात्मा, सदाशिव, शंखी, चक्री, गदी, शार्ङ्गी, लांगूली, मुसली, हली ॥ १३६ ॥ किरीटी, कुण्डली, हारी, मेखली, कवची, ध्वजी, योधा, जेता, महावीर्य, शत्रुघ्न, शत्रुतापन ॥ १३७ ॥ शास्ता, शास्त्रकर, शास्त्र, शंकर, शंकरस्तुत, सारथी, सात्त्विक, स्वामी, सामवेदप्रिय, सम ८०० ॥ १३८ ॥ पवन, संहति, शक्ति, सम्पूर्णाङ्ग, समृद्धिमान्, स्वर्गद, कामद, श्रीद, कीर्तिद, कीर्तिदायक ॥ १३९ ॥ मोक्षद, पुण्डरीकाक्ष, क्षीराब्धिकृतकेतन, सर्वात्मा, सर्वलोकेश, प्रेरक, पापनाशन ॥ १४० ॥ वैकुण्ठ, पुण्डरीकाक्ष, सर्वदेवनमस्कृत, सर्वव्यापी, जगन्नाथ, सर्वलोकमहेश्वर ॥ १४१ ॥ सर्ग-स्थितिअन्तकृत्, देव, सर्वलोकसुखावह, अक्षय, शाश्वत, अनन्त क्षयवृद्धिविवर्जित ॥ १४२ ॥ निर्लेप, निर्गुण, सूक्ष्म, निर्विकार, निरञ्जन, सर्वोपाधिविनिर्मुक्त, सत्तामात्रव्यवस्थित ॥ १४३ ॥ अविकारी, विभु, नित्य, परमात्मा, सनातन, अचल, निश्चल, व्यापी, नित्यतृप्त, निराश्रय ॥ १४४ ॥ श्याम, युवा, लोहिताक्ष, शोभितभाषण, आजानुबाहु, सुमुख, सिंहस्कन्ध, महाभुज ॥ १४५ ॥ सत्त्ववान्, गुणसम्पन्न, अपने तेजसे दीप्यमान, कालात्मा, भगवान्, काल,

नारायणः परं ज्योतिः परमात्मा सनातनः । विश्वकृद्विश्वभोक्ता च विश्वगोप्ता च शाश्वतः ॥ १४७॥
विश्वेश्वरो विश्वमूर्तिर्विश्वात्मा विश्वभावनः । सर्वभूतसुहृच्छांतः सर्वभूतानुकंपनः ॥१४८॥
सर्वेश्वरः सर्वशर्वः सर्वदाऽऽश्रितवत्सलः । सर्वगः सर्वभूतेशः सर्वभूताशयस्थितः ॥१४९॥
अभ्यंतरस्थस्तमसश्छेत्ता नारायणः परः । अनादिनिधनः स्रष्टा प्रजापतिपतिर्हरिः ॥१५०॥
नरसिंहो हृषीकेशः सर्वात्मा सर्वदृग्वशी । जगतस्तस्थुषश्चैव प्रभुर्नेता सनातनः ९०० ॥१५१॥
कर्ता धाता विधाता च सर्वेषां पतिरीश्वरः । सहस्रमूर्धा विश्वात्मा विष्णुर्विश्वदृगव्ययः ॥१५२॥
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः सहस्राक्षः सहस्रपात् । तत्त्वं नारायणो विष्णुर्वासुदेवः सनातनः ॥१५३॥
परमात्मा परं ब्रह्म सच्चिदानंदविग्रहः । परं ज्योतिः परं धाम पराकाशः परात्परः ॥१५४॥
अच्युतः पुरुषः कृष्णः शाश्वतः शिव ईश्वरः । नित्यः सर्वगतः स्थाणू रुद्रः साक्षी प्रजापतिः ॥१५५॥
हिरण्यगर्भः सविता लोककृल्लोकभुग्विभुः ॐकारवाच्यो भगवान्श्रीभूलीलापतिः प्रभुः ॥१५६॥
सर्वलोकेश्वरः श्रीमान् सर्वज्ञः सर्वतोमुखः । स्वामी सुशीलः सुलभः सर्वगः सर्वशक्तिमान् ॥१५७॥
नित्यः संपूर्णकामश्च नैसर्गिकसुहृत्सुखी । कृपापीयूषजलधिः शरण्यः सर्वशक्तिमान् ॥१५८॥
श्रीमान्नारायणः स्वामी जगतां प्रभुरीश्वरः । मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः ॥१५९॥
रामो रामश्च कृष्णश्च बौद्धः कल्की परात्परः । अयोध्येशो नृपश्रेष्ठः कुशबालः परंतपः ॥१६०॥
लवबालः कंजनेत्रः कंजांघ्रिः पंकजाननः । सीताकांतः सौम्यरूपः शिशुजीवनतत्परः ॥१६१॥
सेतुकृच्चित्रकूटस्थः शबरीसंस्तुतः प्रभुः । योगिध्येयः शिवध्येयः शास्ता रावणदर्पहा ॥१६२॥
श्रीशः शरण्यो भूतानां संश्रिताभीष्टदायकः । अनंतः श्रीपती रामो गुणभृन्निर्गुणो महान् १००० ॥
एवमादीनि नामानि ह्यसंख्यान्यपराणि च । एकैकं नाम रामस्य सर्वपापप्रणाशनम् ॥१६४॥
सहस्रनामफलदं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् । सर्वसिद्धिकरं पुण्यं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥१६५॥

कालचक्रप्रवर्तक ॥ १४६ ॥ नारायण, परंज्योति, परमात्मा, सनातन, विश्वकृत्, विश्वभोक्ता, विश्वगोप्ता, शाश्वत ॥ १४७ ॥ विश्वेश्वर, विश्वमूर्ति, विश्वात्मा, विश्वभावन, सर्वभूतसुहृत्, शान्त, शर्वभूतानुकम्पन ॥१४८॥ सर्वेश्वर, सर्वशर्व, सर्वदा आश्रितवमत्सल, सर्वग, सर्वभूतेश, सर्वभूताशयस्थित ॥ १४९ ॥ अभ्यन्तरस्थ, अन्धकारनाशक, नारायण, पर, अनादिनिधन, स्रष्टा, प्रजापति, हरि ॥ १५० ॥ नरसिंह, हृषीकेश, सर्वात्मा, सर्वदृक्, वशी, स्थावर तथा जंगम विश्वके प्रभु, नेता, सनातन ९०० ॥ १५१ ॥ कर्ता, धाता, विधाता, सबके पति, ईश्वर, सहस्रमूर्धा, विश्वात्मा, विष्णु, विश्वदृक्, अव्यय ॥ १५२ ॥ पुराणपुरुष, श्रेष्ठ, सहस्राक्ष, सहस्रपात्, तत्त्व, विष्णु, नारायण, वासुदेव, सनातन ॥ १५३ ॥ परमात्मा, परब्रह्म, सच्चिदानन्दविग्रह, परंज्योति, परंधाम, पराकाश, परात्पर, ॥ १५४ ॥ अच्युत, कृष्ण, शाश्वत, शिव, ईश्वर, नित्य, सर्वगत, स्थाणु, रुद्र, साक्षी, प्रजापति ॥ १५५ ॥ हिरण्यगर्भ, सविता, लोककृत्, विभु, ॐकारवाच्य, भगवान्, श्रीभूलीलापति, प्रभु ॥ १५६ ॥ सर्वलोकेश्वर, श्रीमान्, सर्वज्ञ, सर्वतोमुख, स्वामी, सुशील, सर्वग, सर्व-सर्वशक्तिमान्, प्रभु ॥ १५७ ॥ सम्पूर्णकाम, नैसर्गिकसुहृद, सुखी, कृपापीयूषजलधि, सबके शरण्य ॥ १५८ ॥ श्रीमान्, नारायण, स्वामी, सब भुवनोंके प्रभु, ईश्वर, मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन ॥ १५९ ॥ राम, कृष्ण, बौद्ध, कल्की, परात्पर, अयोध्येश, नृपश्रेष्ठ, कुशके पिता, परन्तप ॥ १६० ॥ लवके पिता, सेतुकृत्, चित्रकूटस्थ, कमलनयन, कमलचरण, कमलमुख, सीताकान्त सौम्यरूप, शिशुजीवनतत्पर ॥ १६१ ॥ शबरीसंस्तुत, प्रभु, योगिध्येय, शिवध्येय, शास्ता, रावणदर्पहा ॥ १६२ ॥ श्रीश, शरण्य, आश्रितोंके अभीष्टदायक, अनन्त, श्रीपति, राम, गुणभृत, निर्गुण, महान् १००० ॥ १६३ ॥ यहाँ रामसहस्रनाम पूर्ण हुआ। इसी तरह और भी भगवान्के बहुतसे नाम हैं, जिनकी गणना ही नहीं की जा सकती। रामका एक-एक नाम सब प्रकारके पापोंको हरने तथा सहस्रनामका फल देनेवाला है। यह रामनाम सब प्रकारकी समृद्धियों एवं

मन्त्रात्मकमिदं सर्वं व्याख्यातं सर्वमंगलम् । उक्तानि तव पुत्रेण विघ्नराजेन धीमता ॥१६६॥
सनत्कुमाराय पुरा तान्युक्तानि मया तव । यः पठेच्छृणुयाद्वापि स तु ब्रह्मपदं लभेत् ॥१६७॥
तावदेव बलं तेषां महापातकदंतिनाम् । यावन्न श्रूयते रामनामपंचाननध्वनिः ॥१६८॥
ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः । शरणागतघाती च मित्रविश्वासघातकः ॥१६९॥
मातृहा पितृहा चैव भ्रूणहा वीरहा तथा । कोटिकोटिसहस्राणि ह्युपपापानि यान्यपि ॥१७०॥
संवत्सरं क्रमाज्जप्त्वा प्रत्यहं रामसन्निधौ । निष्कण्टकं सुखं भुक्त्वा ततो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१७१॥

सूत उवाच

एवं शौनक पार्वत्यै रामनामसहस्रकम् । यथा शिवेन कथितं मया तेऽद्य निवेदितम् ॥१७२॥

श्रीरामदास उवाच

यथा शिष्य त्वया पृष्टं रामनमसहस्रकम् । तत्सूतोक्तं सविस्तारं मया तेऽद्य निवेदितम् ॥१७३॥
अनेन रामं सदसि नारदः स्तुतवान्मुनिः । रामनामसहस्रेण भुक्तिमुक्तिप्रदेन च ॥१७४॥

श्रीरामनाम्नां परमं सहस्रकं पापापहं सौख्यविवृद्धिकारकम् ।
भवापहं भक्तजनैकपालकं स्त्रीपुत्रपौत्रप्रदमृद्धिदायकम् ॥१७५॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये राज्यकाण्डे पूर्वार्धे रामसहस्रनामकथनं नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

द्वितीयः सर्गः

(कल्पवृक्ष और पारिजातके पृथ्वीपर आनेका कारण)

विष्णुदास उवाच

गुरो त्वया रामनामसहस्रं राघवस्य च । ध्यानं कल्पतरोर्मूले कथितं स्वर्णपीठके ॥ १ ॥

सिद्धियोंका करनेवाला और मुक्ति-मुक्तिका दाता है। हे पार्वति ! मैंने अभी जो सहस्रनाम तुम्हें बतलाया है, यह मन्त्रात्मक और सर्वमंगलकारक है। इसे तुम्हारे पुत्र गणेशजीने स्वयं सनत्कुमारको बतलाया था। उसे मैंने आज तुमसे कहा है । जो कोई इस सहस्रनामको पढ़ता और सुनता है, उसे ब्रह्मपद प्राप्त होता है॥ १६४–१६७॥ महापातकरूपी मतवाले हाथियोंका बल तभी तक रहता है, जब तक रामनामरूपी पंचानन (सिंह) की गर्जना नहीं सुनायी देती ॥ १६८ ॥ जो मनुष्य ब्रह्महत्यारा, मद्यप, गुरुकी शय्यापर शयन करनेवाला तथा चोर हो। जो शरणागतको मारनेवाला, मित्रके साथ विश्वासघात करनेवाला, माता, पिता, भ्रूण (गर्भस्थ संतान) तथा वीर मनुष्यकी हत्या करनेवाला हो तथा जिसने संसारमें करोड़ों पाप किये हों, वह भी यदि श्रीरामके पास बैठकर एक संवत्सर पर्यन्त प्रतिदिन इस स्तोत्रका पाठ करे तो संसारमें निष्कंटक सुख भोगकर अन्तमें मोक्ष पाता है॥ १६९ ॥ १७० ॥ सूतजी बोले—हे शौनक ! शिवजीने पार्वतीको जिस प्रकार रामका सहस्रनाम सुनाया था, वही मैंने आज तुम्हें बताया है॥ १७१ ॥ श्रीरामदासने कहा—हे शिष्य ! जैसे तुमने हमसे रामका सहस्रनाम पूछा, वैसे मैंने तुम्हें बतलाया। इसी सहस्रनामसे नारदने सभामें रामजीकी स्तुति की थी । क्योंकि यह स्तोत्र भुक्ति-मुक्ति सब कुछ देनेवाला है॥ १७२–१७४॥ यह रामका सहस्रनाम पापोंका नाशक, सौख्यवर्द्धक, सांसारिक पापोंका नाशक, भक्तजनोंका पालक और स्त्री-पुत्र-पौत्र तथा सम्पत्तिका देनेवाला है॥ १७५॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे पं० रामतेज-पाण्डेयविरचित 'ज्योत्स्ना' भाषाटीकासहिते राज्यकाण्डे पूर्वार्द्धे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

श्रीविष्णुदासने कहा—हे गुरो ! आपने रामका सहस्रनाम बताते समय कहा था कि कल्पवृक्षके नीचे